(ख) तथा (ग). जी नहीं। महत्वपूर्ण आर्टिलरी आयुधों के लिए गोला बारूद का देश में निर्माण करने के लिए हमने लाईसेन्स प्राप्त किए हैं।

उत्तर प्रदेश में अल्यूमिनियम कारखाने की स्थापना

3347. **श्री बृज भूषण लाल :**
श्री अटल बिहारी वाजपेयी :
श्री जगन्नाथ राव जोशी :
श्री रणजीत सिंह :
श्री सूरज भान :
श्री राम गोपाल शालवाले :

क्या प्रधान मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या अणु शक्ति आयोग ने कृषि उद्योग के विकास के लिए पश्चिमी उत्तर प्रदेश में एक अल्यूमिनियम कारखाने की स्थापना की संभावनाओं का अध्ययन किया है ;

(ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ; और

(ग) इस बारे में सरकार की प्रतिक्रिया है ?

प्रधान मन्त्री वित्त मन्त्री, अणु शक्ति मन्त्री तथा योजना मन्त्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : (क) तथा (ख). परमाणु ऊर्जा आयोग ने बड़े आकार के परमाणु बिजलीघरों के इर्द गिर्द कृषि-उद्योग समूह स्थापित करने की सम्भावनाओं का अध्यन करने के लिए एक कार्यकारी वर्ग नियुक्त किया था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक क्षेत्र में 150 मीट्रिक टन प्रति दिन की क्षमता का एक अल्यूमिनियम कारखाना लगाने के बारे में विचार किया गया है। इस कार्यकारी वर्ग ने एक प्रारम्भिक प्रतिवेदन पेश कर दिया है जिसकी प्रतियां संसद के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। अध्ययन अभी जारी है।

चाय का निर्यात

3348. **श्री रघुवीर सिंह शास्त्री :**
श्री गाडिलिंगन गोड़ा :
श्री वेणीशंकर शर्मा :

क्या वैदेशिक व्यापार तथा पूर्ति मन्त्री यह बतलाने की कृपा करेंगे कि -

(क) किन-किन देशों को भारतीय चाय का निर्यात कम कर दिया गया है किन-किन देशों को इस कार्यवाही से लाभ हुआ है ;

(ख) चालू वर्ष के पहले 6 महीनों में तथा गत वर्ष की इसी अवधि में चाय का कितना निर्यात किया गया ; और

(ग) चाय के निर्यात में कमी को रोकने के लिये सरकार का क्या कार्यवाही करने का विचार है।

वैदेशिक व्यापार तथा पूर्ति मंत्रालय में उप मन्त्री (श्री चोधरी राम सेवक) : (क) ब्रिटेन, नीदरलैंड पूर्व यूरोपीय देश (सोवियत संघ को छोड़कर) तथा सं० अ० गणराज्य को भारतीय चाय के निर्यातों में 1967 की तुलना में 1968 में कुछ गिरावट आई। वर्ष 1968 में पूर्व अफ्रीकी देशों तथा इन्डोनेशिया से चाय के निर्यातों में वृद्धि हुई।

(ख) जनवरी से जून, 1669 तक की अवधि में भारत से 62,717 हजार क्रिग्रा चाय का निर्यात किया गया, जब कि जनवरी से जून, 1968 की अवधि में 67,830 हजार किग्रा चाय का निर्यात किया गया था।

(ग) यह समस्या मुख्यतः पूर्ति तथा मांग की है। चाय की खपत में वृद्धि चाय के उत्पादन में वृद्धि के अनुरूप नहीं हुई है। प्रयास यह है कि खपत को बढ़ाने तथा निर्यातों को नियंत्रित करने में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग उत्पन्न किया जाए।

भारतीय चाय के सम्बन्ध में किये गये उपायों में कतिपय अधिक महत्वपूर्ण उपाय ये

हैं: (1) चाय पर निर्यात शुल्क में कमी, (2) चाय पर से विशेष उत्पादन शुल्क को समाप्त करना, (3) मात्रा बढ़ाने, लागत कम करने तथा किस्म सुधारने के उद्देश्य से पुराने चाय क्षेत्रों का पुनर्रोपण करने में उद्योग को सहायता देने हेतु मैदानी बागानों के लिये 3500 रु० प्रति हेक्टर तथा पहाड़ी बागानों के लिये 4500 प्रति हेक्टार की दर पर एक पुर्रोपण उपदान योजना, (4) लंदन, ब्रसेल्स, न्यू यार्क, काहिरा तथा सिडनी में स्थापित चाय केंद्रों के माध्यन से चाय के लिये संवर्धनमक कार्य, (5) चुने हुए विदेशी बाजारों में स्थानीय संमिश्रणकर्ताओं । संवेष्टकों के सहयोग से भारतीय चाय के विशेष पैकेटों को बढ़ावा, (6) विदेशों में प्रचार के उपयुक्त माध्यमों से विज्ञापन, (7) व्यापार मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग लेना, (8) चाय को बढ़ावा देने हेतु विदेशों में प्रतिनिधिमंडल प्रायोजित करना और विदेशों से प्रति मडलों का भारत बुलाना और (9) उत्पादन करने वाले देशों तथा स्थानीय चाय व्यापारियो के सहयोग से विभिन्न बाहरी देशों में कार्य कर रही चाय परिषदों में सदस्यता के माध्यम से चाय की खपत में वृद्धि करने के लिये विदेशी बाजारो में व्यापक संवर्धन उपाय करना ।

वर्ष 1970 तक के लिये अणु शक्ति के उत्पादन के लिये निर्धारित किये गये लक्ष्य

3349. **श्री रघुवीर सिंह शास्त्री** : क्या प्रधान मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अणु शक्ति का मूल लक्ष्य वर्ष 1970 के अन्त तक 1,000 मेगावाट अणुशक्ति की अधिष्ठापित क्षमता बनाने का था ;

(ख) यह लक्ष्य कब तक पूरा हो जायेगा ; और

(ग) लक्ष्य पूरा होने में बिलम्ब के क्या कारण हैं ?

प्रधान मन्त्री, वित्त मन्त्री, अणु शक्ति मंत्री तथा योजना मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी) : (क) जी, हां ।

(ख) सन् 1973-74 तक.

(ग) निम्नलिखित परमाणु बिजलीघर निर्माणाधीन है :-

तारा पुर परमाणु बिजलीघर	380 मैगावाट
राजस्थान परमाणु बिजलीघर यूनिट । तथा ।।	400 मैगावाट
मद्रास परमाणु बिजलीघर यूनिट ।	200 मैगावाट
	980 मैगावाट

तारापुर परमाणु बिजलीघर के पूरा होने में 9 मास की देरी हुई है जिसका कारण अंतिम जाँच के समय पाई गई कुछ त्रिटियाँ थी जिन्हें दूर करना आवश्यक था ।

राजस्थान परमाणु बिजलीघर के यूनिट-1 के निर्धारित निर्माण कार्यक्रम में कुछ देरी हुई है जिसका कारण भारतीय तथा कनाडा के सप्लायरों से प्राप्त होने वाले उपकरणों में विलम्ब है । आशा की जाती है कि अब यह बिजलीघर पहले निर्धारित सन् 1969 के अन्त के स्थान पर सन् 1970 के अन्त तक चालू हो जायेगा ।

राजस्थान परमाणु बिजलीघर के दूसरे यूनिट पर निर्धारित समय सन् 1965 में काम शुरू न हो सका क्योंकि इसके लिये आवश्यक वित्तीय तथा तकनीकी करार फरवरी, 1967 में पूरे किये गये ।

मद्रास परमाणु बिजलीघर का निर्माण-कार्य सन् 1965 में आरम्भ होना था लेकिन इस प्रायोजना के लिये आवश्यक विदेशी मुद्रा का प्रबन्ध करने के काम आने वाली कठिनाइयों के कारण, इसका निर्माण-कार्य आरम्भ न हो सका । सन् 1966 के मध्य में यह निर्णय किया